



सब गुन रहित कुकबि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी।।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही।।

इसके विपरीत, कुकवि की रची हुई सब गुणों से रहित कविता को भी, राम के नाम एवं यश से अंकित जानकर, बुद्धिमान् लोग आदरपूर्वक कहते और सुनते हैं, क्योंकि संतजन भौरों की भाँति गुण को ही ग्रहण करने वाले होते हैं। श्रीरामचरितमानस / 3

आई.एस.ए. और आई.आई.टी. दिल्ली ने आई.एस.ए. के सदस्य देशों में सौर कौशल को बढ़ावा देने की दिशा में की मजबूत साझेदारी

नई दिल्ली: अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आई.एस.ए.) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली ने नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने की दिशा में सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए दिनांक 25 फरवरी, 2026 को एक फ्रेमवर्क फॉर एक्शन (FFA) को औपचारिक रूप दिया। इसमें क्षमता निर्माण, शैक्षणिक सहयोग और आई.एस.ए. के सदस्य देशों में मानव संसाधन विकास पर विशेष बल दिया जाएगा। यह साझेदारी सौर ऊर्जा के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान, ज्ञान के आदान-प्रदान और प्रौद्योगिकी सहयोग को बढ़ावा देते हुए नवीकरणीय ऊर्जा इंजीनियरों, सौर प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग केंद्र (एस.टी.ए.आर.—सी.) प्रशिक्षकों और अनुसंधान पेशेवरों के प्रशिक्षण में मदद करेगी।

इस समझौता ज्ञापन पर श्री आशीष खन्ना, महानिदेशक, आई.एस.ए. और प्रो. रंगन बनर्जी, निदेशक, आई.आई.टी. दिल्ली द्वारा हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर आई.आई.टी. दिल्ली की ओर से प्रो. विवेक वी. बुवा, उप निदेशक (नीति एवं योजना), प्रो. धन्या सी.टी., संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक), प्रो. सोमनाथ बैद्य रॉय, संकायाध्यक्ष (योजना), प्रो. नीलांजन सेनराय, संकायाध्यक्ष (पूर्व छात्र संबंध), प्रो. रमेश नारायणन, अध्यक्ष, (ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग) तथा श्री फेलिप सालिबा, अध्यक्ष, के.एम.

आई.डी. यूनिट, आई.एस.ए. एवं आई.आई.टी. दिल्ली और आई.एस.ए. के अन्य गणमान्य सदस्य भी उपस्थित थे।

यह रूपरेखा एक अहम पड़ाव है और आई.एस.ए. और आई.आई.टी. दिल्ली के ऊर्जा विज्ञान और इंजीनियरी विभाग के बीच चल रहे क्षमता निर्माण प्रयासों को आगे बढ़ाती है। अब तक इन प्रयासों के माध्यम से अफ्रीका और एशिया प्रशांत क्षेत्र के 18 विकासशील देशों के नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों और प्रबंधन क्षेत्र से जुड़े पेशेवरों के लिए एम. टेक. कार्यक्रम को सफलतापूर्वक समर्थन प्रदान किया गया है।

इस अवसर पर श्री आशीष खन्ना, महानिदेशक, आई.एस.ए. ने कहा, "पिछले पाँच वर्षों में आई.आई.टी. दिल्ली के साथ हमारी साझेदारी के माध्यम से सौ से अधिक विद्यार्थियों ने नवीकरणीय ऊर्जा में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की है। आज वे अफ्रीका, लघु द्वीपीय विकासशील राज्यों (SIDS) और पड़ोसी क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभा रहे हैं, जहाँ सौर ऊर्जा के प्रसार और ऊर्जा पहुँच की सबसे अधिक आवश्यकता है। इस मजबूत आधार पर आगे बढ़ते हुए, हम अब इस साझेदारी को विस्तारित करते हुए 'ट्रेन-द-ट्रेनर्स' मॉडल पर आधारित एक वार्षिक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

शुरू करने जा रहे हैं। आई.आई.टी. दिल्ली के व्यापक शैक्षणिक नेटवर्क का लाभ उठाते हुए और Institute National de l'Énergie Solaire (फ्रांस) के सहयोग से, यह पहल अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के सदस्य देशों में स्वच्छ ऊर्जा क्षमता निर्माण के लिए एक वैश्विक ढांचा स्थापित करने में सहायक होगी। भविष्य को देखते हुए, हम मौजूदा स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के विस्तार पर भी विचार कर रहे हैं, ताकि सार्वजनिक नीति में स्नातकोत्तर कार्यक्रम और सौर ऊर्जा क्षेत्र में पीएच.डी. को शामिल किया जा सके। इससे शैक्षणिक सहयोग और भी गहरा होगा और वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा प्रतिभा को और भी मजबूत किया जा सकेगा। इसमें ग्लोबल साउथ देशों में सौर ऊर्जा में मानव क्षमता को रूपांतरित करने की संभावना है।

प्रो. रंगन बनर्जी, निदेशक, आई.आई.टी. दिल्ली ने कहा कि हमें सौर और नवीकरणीय ऊर्जा में वैश्विक क्षमता विकसित करने के लिए आई.एस.ए. के साथ इस समझौते पर हस्ताक्षर करके प्रसन्नता हो रही है। इससे ग्लोबल साउथ और भारत दोनों के लिए नेट जीरो की दिशा में एक सतत मार्ग बनाने में मदद मिलेगी। हम भविष्य की सतत ऊर्जा प्रणालियों में वितरित सौर ऊर्जा

को बढ़ाने और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ए.आई., एम.एल. और ब्लॉकचेन की नवीनतम तकनीकों को शामिल करेंगे।"

फ्रेमवर्क फॉर एक्शन के अंतर्गत, आई.एस.ए. और आई.आई.टी. दिल्ली चार मुख्य क्षेत्रों में सहयोग करेंगे:

- **क्षमता निर्माण और प्रतिभा विकास**

आई.एस.ए. सदस्य देशों के सौर प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग संसाधन-केंद्र (एस.टी.ए.आर.-सी.) प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करके एक मजबूत वैश्विक प्रतिभा पाइपलाइन का निर्माण करना।

- **शैक्षणिक कार्यक्रम**

प्रमुखा एम.टे.क. कार्यक्रम (नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी और प्रबंधन) से परे सहयोग का विस्तार करना, जिसमें 'ट्रेन-द-ट्रेनर्स' (ToT) कार्यक्रम, सार्वजनिक नीति में स्नातकोत्तर और सौर ऊर्जा क्षेत्र में पीएच.डी. शामिल हैं, ताकि अगली पीढ़ी के स्वच्छ ऊर्जा लीडर्स को तैयार किया जा सके।

- **संयुक्त अनुसंधान और ज्ञान सृजन**

साझा शिक्षण उपकरण, ज्ञान उत्पाद और अनुसंधान परिणामों के समर्थन से सौर संसाधन आकलन, गुणवत्ता मानक, उभरती प्रौद्योगिकियों और नवाचारपूर्ण अनुप्रयोगों में अनुसंधान को आगे बढ़ाना।

- **आउटरीच और ज्ञान आदान-प्रदान**

कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और आउटरीच गतिविधियों का सह-आयोजन करके सहयोग को गहरा करना और वैश्विक सौर ज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना।

यह साझेदारी वैश्विक सौर संक्रमण के लिए दीर्घकालिक क्षमता निर्माण के प्रति साझा प्रतिबद्धता को मजबूत करती है।

भारती दूरसंचार प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन स्कूल के अध्यक्ष की नियुक्ति

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त दिनांक 26.02.2026 की अधिसूचना के अनुसार निदेशक महोदय ने विद्युत इंजीनियरी विभाग के **प्रो. मानव भटनागर** को 02.03.2026 से 2 वर्ष की अवधि के लिए **भारती दूरसंचार प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन स्कूल के अध्यक्ष** के रूप में नियुक्त किया है।

श्री गोपी कीर्तन महिला मंडल (पंजीकृत)

श्री गोपी कीर्तन महिला मंडल (पंजीकृत) की वार्षिक आम सभा बैठक दिनांक 23.11.2025 को दोपहर 2.00 बजे प्रो. अनुश्री मलिक की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसमें सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का चयन निम्नलिखितानुसार किया गया:—

पदाधिकारी

प्रधान : श्रीमती नीलम तोमर
उप प्रधान : श्रीमती मीना चौधरी
सचिव : श्रीमती यशोदा रानी
सह सचिव : श्रीमती रश्मि तेवतिया
कोषाध्यक्ष : श्रीमती रितु
लेखा परीक्षक : श्रीमती दीपा निगोता

कार्यकारिणी के सदस्य

श्रीमती ललिता सिंह, श्रीमती ब्रिजेश दहिया, श्रीमती सीमा गुप्ता, श्रीमती राधिका, श्रीमती ममता, श्रीमती कृष्णा कुमारी, श्रीमती आरती, श्रीमती रजनी।

विशेष आमंत्रित सदस्य :—आई.आई.टी. परिसर में रहने वाली एवं संस्थान से सेवानिवृत्त समस्त सम्माननीय सखियाँ।

त्यागपत्र स्वीकृत

स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/Pers/27955/2026 दिनांक 26.02.2026 के अनुसार **श्री महावीर सिंह**, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (स्थापना अनुभाग-1) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था, जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 26.02.2026 को स्वीकार कर लिया है। अतः श्री महावीर सिंह को 26.02.2026 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान की निम्नलिखित स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 28 फरवरी, 2026 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रही हैं:—

श्रीमती नीलम सिंधवानी (25807), उप प्रशासनिक अधिकारी, मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग



श्रीमती नीलम सिंधवानी ने 04.01.1991 को संस्थान में आशुलिपिक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था।

01.05.1998 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया। 01.02.2003 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 04.01.2011 को एम.ए.सी.पी के अन्तर्गत आपको ग्रेड वेतन 4600/- रु. में उन्नयन दिया गया। 04.01.2021 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको ग्रेड वेतन 4800/- रु. में उन्नयन दिया गया। 08.12.2022 को डी.पी.सी. के अन्तर्गत आपको अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 22.12.2022 को आर. ऐन्ड पी.आर. के अन्तर्गत आपको उप प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पुनः पदनामित किया गया। मृदु स्वभाव की श्रीमती नीलम सिंधवानी एक मिलनसार एवं कर्तव्यनिष्ठ उप प्रशासनिक अधिकारी रही हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्य को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY DELHI

प्रशासनिक अधिकारियों के दैनिक सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली संक्षिप्त आदेशात्मक टिप्पणियाँ
(Brief important notings being used by Administrative Officers in their daily routine official work)

अंग्रेजी	हिन्दी
Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
All concerned should note carefully.	सभी संबंधित व्यक्ति इसे ध्यान से नोट कर लें।
Application is rejected.	प्रार्थना-पत्र अस्वीकृत किया जाता है।
Approved.	अनुमोदित।
Approved as a very special case. This should not, however be Quoted as a precedent.	एक विशेष मामला मानते हुए अनुमोदित किया जाता है किन्तु आगे उदाहरण के रूप में इसका उल्लेख न किया जाए।
Wait further report.	आगे और विवरण की प्रतीक्षा कीजिए।
Await reply.	उत्तर की प्रतीक्षा करें।
Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें।
Draft is concurred in.	प्रारूप पर सहमति दी जा रही है।
Draft may not be issued.	अब प्रारूप जारी करने की आवश्यकता नहीं है।
Draft reply on the lines suggested above may be Put up.	उपरोक्त सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा तैयार करें।
Enquire into the case and report early.	मामले की जांच करें और शीघ्र रिपोर्ट दें।
Enquiry be completed and its report submitted at an Early date.	जांच पूरी की जाए और रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत की जाए।
Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
Fix a date for meeting.	बैठक के लिए तारीख नियत करें।
Give top priority to this work.	इस कार्य को परम प्राथमिकता दें।
I agree.	मैं सहमत हूँ।
I agree with 'A' above.	मैं उपर्युक्त 'क' से सहमत हूँ।

अंग्रेजी	हिन्दी
I disagree.	मैं सहमत नहीं हूँ।
I fully agree with office note.	मैं कार्यालय की टिप्पणी से पूर्णतया सहमत हूँ।
Inform accordingly.	तदनुसार सूचित किया जाए।
Issue as amended.	यथासंशोधित जारी किया जाए।
Issue reminder urgently.	तुरन्त अनुस्मारक भेजें।
Issue today.	आज ही भेज दिया जाए।
Issue warning.	चेतावनी दी जाए।
Kindly see it for approval.	कृपया इसे अनुमोदन के लिए देखें।
May file.	फाईल कर दिया जाए।
No assurance in the matter can be given at this stage.	इस मामले में इस समय कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता।
Order may be issued.	आदेश जारी कर दिया जाए।
Office may note it carefully.	कार्यालय इसे सावधानी से नोट कर ले।

भूल सुधार

31 जनवरी, 2026 को प्रकाशित 'सम्पर्क' अंक 2 में सेवानिवृत्ति शीर्षक के अंतर्गत प्रो. अशोक कुमार गांगुली के रसायन विज्ञान विभाग में प्रोफेसर पद पर नियुक्ति की तारीख 26 अक्टूबर, 2006 है जो मुद्रण त्रुटि के कारण 26 अक्टूबर, 2026 हो गई थी। अतः त्रुटि में सुधार करते हुए इसे **26 अक्टूबर, 2006** पढ़ा जाए।

दुःखद निधन

स्थापना अनुभाग-II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2026/492512 दिनांक 16.02.2026 के अनुसार **श्री प्रमोद कुमार** (50722), परिचर (भण्डार एवं क्रय अनुभाग) का दिनांक 09.02.2026 को आकस्मिक निधन हो गया है। संस्थान के सभी सदस्य परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को चिरशांति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने का साहस एवं धैर्य प्रदान करें।

विश्व भाषा की संभावना संजोए हिंदी

'भाषा विश्वं योजयति' अर्थात् भाषा विश्व को जोड़ती है। साहित्य, सिनेमा, संवाद आदि माध्यमों से 'वैश्विक कुटुंब' को आत्मीयता के सूत्र में पिरोने की आकांक्षा संजोए वर्षों से प्रयासरत है हिन्दी। वर्तमान विश्व में अब दूरियां घट रही हैं और भाषाएं नए भूगोल में अपनी जड़ें तलाश रही हैं। ऐसे समय में हिंदी केवल भारत की भाषा भर नहीं रह गई है, बल्कि वह विश्व की अनेक संस्कृतियों के बीच संवाद का सेतु बनकर उभर रही है। आइए, हिंदी की प्रवासी लेखिकाओं से जानते हैं कि विदेश में क्या है हिंदी की स्थिति....

विदेश में पहचान की भाषा है हिंदी – शिखा वाष्णीय (लंदन, यू.के.)

लंदन जैसे बहुभाषी नगर में रहते हुए यह अनुभव गहरा हो जाता है कि हिंदी आत्मविश्वास के साथ वैश्विक मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। विदेश में रहते हुए हिंदी में लिखना अपने भीतर के भारत को जीवित रखने जैसा है। लगता है कि भाषा के माध्यम से हम अपनी संस्कृति को जीवित रख सकते हैं। इसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हमारा दायित्व है। प्रवासी भारतीयों के लिए हिंदी सिर्फ संवाद की भाषा नहीं, बल्कि पहचान की भाषा भी है।

अब हिंदी जानना, अपनी भाषा में बात करना प्रवासी भारतीय घरों में महत्वपूर्ण बन रहा है। अब बच्चों को हिंदी सिखाना सिर्फ इसलिए आवश्यक नहीं है, क्योंकि उन्हें भारत जाकर अपनी नानी, दादी से हिंदी में बात करनी है, बल्कि हिंदी भाषा का ज्ञान अपनी संस्कृति की पहचान का माध्यम है। परिवारों में हिंदी और अंग्रेजी साथ रहती हैं। माता-पिता सचेत रूप से बच्चों से हिंदी में संवाद ही नहीं करते, बल्कि उन्हें रामायण, महाभारत, हिंदी कविताएं पढ़ाते हैं, ताकि भाषा के साथ संस्कृति भी हस्तांतरित हो सके। हिंदी साहित्य से परिचय अब व्यक्तित्व विकास का हिस्सा है। हिंदी साहित्य यहां एक नई करवट ले रहा है। हमारे लेखन में विदेश केवल पृष्ठभूमि नहीं है। वह एक जीवंत पात्र की तरह उपस्थित है। यहां हिंदी के

लेखक अब प्रवास को केवल पीड़ा नहीं, बल्कि वैचारिक विस्तार के रूप में देखते हैं। इसमें सिर्फ नोस्टाल्जिया नहीं है, बल्कि तथ्य हैं, वसुधैव कुटुंबकम का भाव है। यह एक जीवंत अनुभव का साहित्यिक रूपान्तरण है। भौगोलिक विविधताएं भाषा और साहित्य में नए रंग भरती हैं। नई भाषाएं, नई संस्कृतियां और नए संघर्ष ये सब मिलकर हिंदी भाषा और साहित्य को और भी समृद्ध बनाएंगे।

भाषाई सेतु बनती मातृभाषा – आराधना झा श्रीवास्तव (सिंगापुर)

बेहतर अवसर की खोज में प्रवास की परिधि का विस्तार होता जा रहा है। यह प्रवास का ही परिणाम है कि भारत के अहिंदीभाषी राज्यों से लेकर सुदूर विदेश की धरती तक हिंदी अपने पैर पसारती जा रही है। सिंगापुर में द्विभाषा नीति लागू हुए 25 वर्ष से अधिक समय हो चुका है। इस नीति ने सिंगापुर में हिंदी शिक्षा को अनुकूल वातावरण दिया है। यहां विद्यालयों में लगभग 8000 विद्यार्थी द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। कई अंतरराष्ट्रीय विद्यालयों के साथ नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर और नान्यांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी में भी अहिंदीभाषी एवं विदेशी मूल के विद्यार्थियों को हिंदी सिखाई जाती है। सिंगापुर के विद्यार्थियों और शिक्षिकाओं के साथ एक परिचर्चा में अधिकांश विद्यार्थियों का कहना था कि वे अपनी मां की प्रेरणा से हिंदी सीख रहे हैं। भाषाई संस्कार में मां के महत्व के कारण ही हम मातृभाषा शब्द का प्रयोग करते हैं। भिन्न भाषिक पृष्ठभूमि के युगल के प्रेम और परिणय-संबंध भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हैं। कई बार बच्चे अपने दादा-दादी अथवा नाना-नानी के साथ संवाद की प्रेरणा से भी हिंदी सीखते हैं।

सिंगापुर में जहां एक ओर पुरानी पीढ़ी भाषाई विरासत को बचाने के लिए संघर्षरत है तो दूसरी ओर नई पीढ़ी में लगाव से अधिक लाभ की भावना बलवती हो रही है। अन्य विदेशी भाषाएं सीखना उन्हें करियर के दृष्टिकोण से लाभदायक लगता है। सरकारी नीतियां हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक तो हो सकती हैं, किंतु उपलब्धि तो तब है, जब हिंदी हमारे संवाद की प्राथमिक भाषा बने और इसमें परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है।

अमेरिका में हिंदी की स्थिति अच्छी – सुधा ओम ढींगरा (मोरिसविले, यू.एस.ए.)

भारत में हिंदी में बात करना भले ही कुछ लोगों के लिए शर्म की बात मानी जाती हो, लेकिन विश्व में हिंदी की स्थिति बहुत अच्छी है। विश्व के 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, जिसमें भारतीय मूल के विद्यार्थियों के साथ स्थानीय विद्यार्थी भी आते हैं। मैं सिर्फ अमेरिका की बात करूं तो आज बच्चों को हिंदी पढ़ाने के लिए हर शहर में सप्ताहांत में हिंदी के स्कूल चलते हैं, जहां सात से 14 साल तक के बच्चों को हिंदी पढ़ाई जाती है।

स्थानीय स्कूलों में हाई स्कूल के बच्चों के लिए लगभग हर शहर में हिंदी का कोर्स रखवाया गया है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए संस्थाएं हैं, जहां कवि-गोष्ठियां, कवि सम्मलेन और साहित्यिक गोष्ठियां की जाती हैं। कई प्रवासी साहित्यकार हिंदी साहित्य में अपना स्थान बना चुके हैं। हां, जो लोग स्वयं को भारतीय समझते हैं और अपनी भाषा से प्यार करते हैं, उनके घरों में हिंदी बोली जाती है, पर जो भारत में ही अंग्रेजी से ज्यादा लगाव रखते थे, यहां आकर उनके घरों में अंग्रेजी हो बोली जाती है और उनके बच्चों को हिंदी नहीं आती। लगभग हर प्रदेश के लोग अपने घरों में अपनी भाषा ही बोलते दिखते हैं। कई स्थानीय सरकारें अपने कार्य को लोगों तक पहुंचाने के लिए हिंदी में पोस्टर बनाने लगीं हैं। कई शहरों में दीपावली, होली जैसे त्योहार स्थानीय सरकार के साथ मिलकर मनाए जाते हैं। कई संस्थाएं भी दीपावली, होली मनाती हैं। मैं पिछले 20 वर्षों से अपने शहर में रामलीला करवा रही हूं, जो शुद्ध हिंदी में होती है। हजारों की संख्या में लोग आते हैं। यहां कला और संस्कृति को जिंदा रखने के लिए हिंदी में बहुत से सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। मुझे दुःख इस बात का है कि जब मैं भारत आती हूं तो लोगों को हिंदी से दूर पाती हूं। मुझे बड़ा झटका लगता है कि हिंदी जिस देश की भाषा है, वहीं उसकी जगह अंग्रेजी को महत्व दिया जाता है।

साभार-दैनिक जागरण
दिनांक 5.1.2026